मासिक
RNI No. MPHIN/2004/14249

# अक्षर वार्ता

मूल्यः 100 /- रूपये

वर्ष - 18 अंक - 12
( अक्टूबर - 2022 )
Vol - XVIII Issue No - XII
(October - 2022)

कला-मानविकी-समाजविज्ञान-जनसंचार-वाणिज्य-विज्ञान-वैचारिकी की अंतरराष्ट्रीय रेफर्ड एवं पियर रिव्यूड शोध पत्रिका

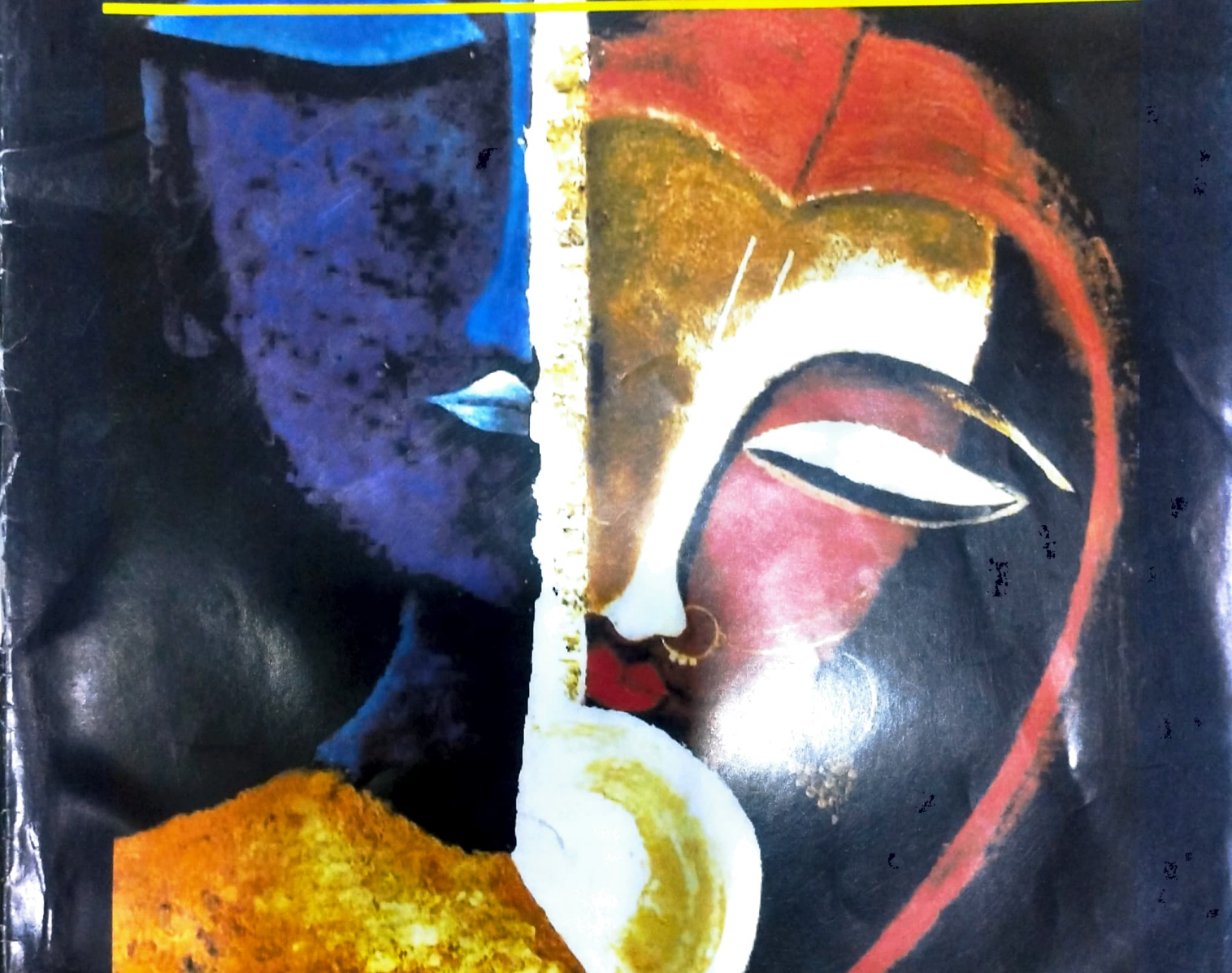

Indexed In International, Impact Factor Services (IIFS) Database and Indexed with IIJIF
Indexed In the International, Institute of Organized Research, (I2OR) Database
Monthly International, Refereed Journal & Peer Reviewed
ISSN 2349 - 7521 , IMPACT FACTOR - 6.375

» aksharwartajournal@gmail.com » www.facebook.com/aksharwartawebpage » +918989547427

AKSHARWARTA IS registered MSME with Ministry of MSME, Government of India
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021

ISSN 2349 - 7521
RNI No. MPHIN/2004/14249

मासिक

# अक्षर वार्ता

मूल्यः 100 /- रूपये

MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021

वर्ष-18 अंक - 12 , अक्टूबर - 2022
Vol - XVIII, Issue No. XII
October - 2022
Impact Factor - 6.375
aksharwartajournal@gmail.com

INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

प्रधान संपादक - प्रो. शैलेन्द्रकुमार शर्मा
संपादक- डॉ. मोहन बैरागी
संपादक मंडल :-
डॉ.जगदीशचन्द्र शर्मा (उज्जैन)
प्रो.राजश्री शर्मा
डॉ. शशि रंजन 'अकेला' (आरजीपीवी,भोपाल)
डॉ. सदानन्द काशीनाथ भोंसले (पुणे)
प्रो. उमापति दिक्षित
डॉ. मोहसिन खान (महाराष्ट्र)
डॉ. दिग्विजय शर्मा
सहायक सम्पादक :-
डॉ.भेरुलाल मालवीय
डॉ. अंजली उपाध्याय
डॉ. उपेन्द्र भार्गव
डॉ. पराक्रम सिंह
डॉ. रूपाली सारये
डॉ. अवनीश कुमार अस्थाना

आवरण चित्र - इंटरनेट से साभार

*विशेषज्ञ समिति*
डॉ. सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' (नार्वे), श्री शेर बहादुर सिंह (यूएसए), डॉ. रामदेव धुरंधर (मॉरीशस), डॉ. स्नेह ठाकुर (कनाडा) डॉ. जय वर्मा (यू.के.), प्रो. गुणशेखर गंगाप्रसाद शर्मा (चीन), डॉ. अलका धनपत (मॉरीशस), प्रो. टी. जी. प्रभाशंकर प्रेमी (बैंगलुरू), प्रो. अब्दुल अलीम (अलीगढ़), प्रो. आरसु (कालिकट), डॉ. रवि शर्मा (दिल्ली), डॉ. सुधीर सोनी (जयपुर), डॉ. अनिल सिंह (मुंबई), डॉ. तुलसीदास परौहा, उज्जैन

*सह संपादक*
डॉ. उषा श्रीवास्तव (कर्नाटक), डॉ. मधुकांता समाधिया (उत्तर प्रदेश), डॉ. अनिल जूनवाल (मप्र), डॉ. प्रणु शुक्ला (राजस्थान), डॉ. मनीष कुमार मिश्रा (मुम्बई/वाराणसी), डॉ. पवन व्यास (उड़ीसा), डॉ. गोविंद नंदाणिया (गुजरात), प्रो. डॉ. किरण खन्ना (अमृतसर, पंजाब)

नोट : पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, लेखकों के अपने विचार है, इनसे संपादक या संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

शोध-पत्र भेजने संबंधी नियम

शोध-पत्र 2500-5000 शब्दों से अधिक नही होना चाहिये। ०. हिन्दी माध्यम के शोध पत्रों को कृतिदेव 010 (**Kruti Dev 010**) या युनिकोड मंगल फोंट में टाईप करवाकर माईक्रोसॉफ्ट वर्ड में भेजें। ०. अंग्रेजी माध्यम के शोध-पत्र टाईम्स न्यु रोमन (**Times New Roman**) ,एरियल फोंट (**Arial**) में टाईप करवाकर माईक्रोसॉफ्ट वर्ड में अक्षरवार्ता के ईमेल पर भेजने के बाद हार्ड कॉपी तथा शोध-पत्र मौलिक होने के घोषणा-पत्र के साथ हस्ताक्षर कर अक्षरवार्ता के कार्यालय को प्रेषित करें। ०. **Please Follow- APA/MLA Style for formatting** अक्षरवार्ता का वार्षिक सदस्यता शुल्क रूपये 1200/-रूपये साधारण डाक से एवं 1800/- रूपये रजिस्टर्ड डाक से एवं प्रकाशन पंजीयन शुल्क रूपये 1500/- का भुगतान बैंक द्वारा सीधे ट्रांसफर या जमा किया जा सकता है। बैंक विवरण निम्नानुसार है- बैंक:- **Union Bank of India,**

| | |
|---|---|
| **Account Holder -** | **Aksharwarta** |
| **Current Accont NO.** | **510101003522430** |
| **IFSC- UBIN0907626** | **Branch- Rishi Nagar,Ujjain,MP,India** |

गुगल पे, फोन पे, पेटीएम, भीम आदि युपीआई से भुगतान के लिए मोबाईल नं. 9424014366 का उपयोग करें
तथा भुगतान की मूल रसीद,शोध-पत्र एवं सीडी के साथ कार्यालय के पते पर भेजना अनिवार्य है।

संपादकीय कार्यालय का पता- संपादक अक्षर वार्ता
43,क्षीर सागर,द्रविड मार्ग,उज्जैन,मप्र. 456006,भारत, मोबा :-8989547427 Email: aksharwartajournal@gmail.com

*नोट :- अक्षरवार्ता में सभी पद मानद व अवैतनिक है।/ शोध पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों में लेखकों के अपने विचार है, संपादक मंडल का इससे सहमत होना आवश्यक नही है।*

अनुक्रम


» स्वच्छन्द प्रेम के कवि : घनानन्द
डॉ. यामिनी राय 07

» क्रांतिकारी चेतना के प्रखर प्रहरी हैं 'पाश'
डॉ. रमेश यादव 10

» समकालीन कहानी में बाजार
सुभाषचन्द्र गुप्त 13

» रामेश्वर सिंह 'काश्यप' का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
कुजन कुमारी 18

» गोविन्द मिश्र के उपन्यासों में धार्मिक (चेतना)
रजनी गोस्वामी, डॉ. उदारता 21

» आदिकाल से लेकर आधुनिक तक स्त्रियों के प्रति दृष्टिकोण
उर्मिला कुमार 24

» ओमप्रकाश वाल्मीकि का साहित्य और राजनीति में जातियाँ
दीप्ति आठिया 26

» डॉ. बलभद्र तिवारी के उपन्यासों में सामाजिक - पारिवारिक संदर्भ
चाँदनी चौरसिया 29

» श्री जगदीश चन्द्र माथुर जी के नाट्य साहित्य में चरित्रांकन
सपना, डॉ. उदारता 31

» "राधेश्याम 'प्रगल्भ' के पद्य साहित्य में राष्ट्रीय संवेदना"
डॉ. हरीश कुमार कसाना 34

» ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में दलित यथार्थ
डॉ. रीनू रानी 37

» केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में दलित चेतना
डॉ. दिनेश राम 39

» "'कितने कटघरे' उपन्यास में कैद स्त्री और जेल जीवन का निर्मम यथार्थ"
राजेश चौहान, डॉ. अर्चना शर्मा 43

» हिन्दी दलित कहानी का वर्तमान परिदृश्य
प्रो. रिकू शाह 47

» वैदिक राष्ट्र
डॉ. दीपशिखा 52

» वीरेन डंगवाल की कविता और भूमंडलीकरण का यथार्थ
डॉ.संजय रणखांबे 54

» केसर कस्तूरी में ग्रामीण यथार्थ
अल्का यादव 57

» हिन्दी कथा-साहित्य में निराला का स्थान
मो. सुहैल खाँ 61

» भिलाली लोक साहित्य और संस्कृति में भीलट देव
सोनल बड़ौले 66

» हाड़ोती के लघु चित्रों में प्रकृति की उपादेयता-एक शोधः (औषधीय, ज्योतिषीय व आध्यात्मिक रूप में)
डॉ. मुक्ति पाराशर 68

» भारत का संविधान और शिक्षा
गरिमा भाटी, डॉ. सुनीता अरोड़ा 71

» हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद
डॉ. मधु पाठक 75

» पत्र-पत्रिकाओं के विज्ञापन में बाज़ार बनती स्त्री
नेहा गौड़ 77

» भारतीय साहित्य में आदिवासी विमर्श
ज्योति आर्या 80

» संस्कृति के प्रसार में सोशल मीडिया की भूमिका
डॉ. सुनीता जैन 83

» स्त्री का आत्मसंघर्ष और 'सेवासदन'
डॉ. निमिषा सिंह 86

» दसवें दशक के नाटकों में चित्रित नारी विद्रोह
डॉ. प्रवीण कुमार वर्मा 89

» सूरसागर में दृष्टव्य लोक जीवन
डॉ. नीलाक्षी जोशी 91

» मध्यप्रदेश की कोरकू जनजाति का सामान्य अध्ययन
डॉ. रश्मि सिंह, डॉ. निर्मला डोंगरे 94

» कोरोना, वैश्वीकरण और महात्मा गाँधी का आर्थिक विकास का मॉडल
दीपक देव 97

» झारखंड में निवासरत संथाल जनजातियों की व्यवसायिक स्थिति, जीवन स्तर एवं उपभोग स्थिति का आर्थिक अध्ययन (गिरिडीह जिले के विशेष संदर्भ में)
जीतेन्द्र कुमार, डॉ. नमिता शर्मा 100

» वशिष्ठ धर्मसूत्र-एक अनुशीलन
डॉ. शालिनी सोनी 103

» बंजारा समुदाय की संस्कृति के बदलते स्वरूप का विश्लेषणात्मक अध्ययन (महाराष्ट्र के यवतमाल जिले के विशेष संदर्भ में)
निता चांगदेव देशभ्रतार 110

» सोशल मीडिया : नई शैक्षिक क्रांति का सूत्रधार (कोरोना काल के विशेष संदर्भ में)
डॉ. सतीश कुमार सिंह 114

» साहित्य और पर्यावरण का अंतःसंबंध (कोई खिड़की इसी दीवार से के परिप्रेक्ष्य में)
डॉ. स्वाति वसंतराव शेलार 116

अक्षर वार्ता
अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2349-7521, Impact Factor - 6.375
Vol - XVIII, Issue - XII, October - 2022
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021
"AKSHARWARTA" Monthly International Refereed Journal

# वीरेन डंगवाल की कविता और भूमंडलीकरण का यथार्थ

**डॉ. संजय रणखांबे**

सहयोगी प्राध्यापक तथा विभागाध्यक्ष, डॉ. अण्णासाहेब जी. डी. बेंडॉळे महिला महाविद्यालय, जलगाँव

**शोध सार** :-प्रस्तुत शोधालेख वीरेन डंगवाल जी द्वारा लिखित 'दुष्चक्र में स्रष्टा' इस कविता-संग्रह पर आधारित है। इस शोधालेख में वीरेन डंगवाल की कविताओं में अभिव्यक्त भूमंडलीकरण के यथार्थ का विवेचन किया है। भूमंडलीकरण के परिणामस्वरूप देश का सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक वातावरण भी काफी प्रभावित हुआ। इस असर को बयान करनेवाली डंगवाल की कविताओं का विवेचन इस शोधालेख में किया गया है। इस भूमंडलीकरण के दौर में सामान्य मेहनतकश मनुष्य का जीवन बद से बद्तर हुआ, इस मनुष्य का पक्ष लेकर लिखी गयी उपर्युक्त संग्रह की कविताओं को रेखांकित करने का प्रयास इस शोधालेख के माध्यम से किया गया है।

**शब्द संकेत** :-भूमंडलीकरण, बाजारीकरण, उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण, एन जी ओ, विकासशील, पूँजीवादी, नवसाम्राज्यवादी, तकनीकी, उपभोक्ता आदि ।

**प्रस्तावना** :-वीरेन डंगवाल हिंदी कविता के चर्चित कवि है। उनके 'इसी दुनिया में' और 'दुष्चक्र में स्रष्टा' यह दो कविता संकलन प्रकाशित हो चुके हैं। 'दुष्चक्र में सृष्टा' के लिए उन्हें साहित्य अकादमी का पुरस्कार भी प्राप्त है। उनकी कविताएँ भारतीय समाज का यथार्थ प्रस्तुत करती है। मनुष्य को केंद्र रखकर लिखी गई उनकी कविता उपेक्षित जनसाधारण का चित्रण करती है। बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में देश में भूमंडलीकरण का प्रारंभ हुआ। इसी दौर में वीरेन डंगवाल जी का पहला काव्य संग्रह प्रकाशित हुआ। 'दुष्चक्र में सृष्टा' यह कविता संकलन 2004 में प्रकाशित हुआ। इस कविता संकलन में भूमंडलीकरण के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिणाम को कवि ने अभिव्यक्त किया है। भूमंडलीकरण के रूप अर्थात् बाजारीकरण, उदारीकरण, निजीकरण जैसी आर्थिक नीतियों ने देश के जनसाधारण के जीवन को काफी प्रभावित किया। मनुष्य के सामाजिक, सांस्कृतिक पहलुओं पर इसका काफी असर देखने के लिए मिला। वीरेन डंगवाल की कविता भूमंडलीकरण के इन्हीं पहलुओं पर प्रकाश डालती है।

भूमंडलीकरण या वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप मुनाफाखोरी की प्रवृत्ति काफी हद तक बढ़ गई। भूमंडलीकरण के कारण देश की सूचना एवं प्रौद्योगिकी में भी काफी परिवर्तन हुआ। कंप्यूटर का बोलबाला हुआ। भूमंडलीकरण के नाम पर सारी दुनिया एक गांव बन गई। कंप्यूटर की करामात से यह सब कुछ संभव हुआ। पूंजीवादी लोगों ने अपना उत्पाद बेचने के लिए जोर-शोर से बाजारीकरण की नीति फैला दी। दुनिया की अविकसित तथा विकासशील देशों में अपनी चीजें बेचने के लिए पूंजीवादी ताकतों ने विज्ञापन जैसी तकनीकों को संचालित किया। इस नई तकनीक का प्रयोग करने के लिए नए युवाओं की आवश्यकता महसूस हुई। इसके परिणाम स्वरूप आईआईटी जैसी प्रौद्योगिकी संस्थाओं में प्रवेश पाने के लिए और कंप्यूटर इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए युवाओं में प्रतियोगिता की भावना बढ़ गई। इस दौड़ ने युवाओं की जिंदगी छीन ली। वे भी एक मशीन के पुर्जे के रूप में काम करने लगे हैं। उनमें भी लालच और नई महत्वाकांक्षाओं ने जन्म लिया। बिल गेट्स जैसे नए पूंजीपति अपने इशारों पर उन्हें नचाने लगे हैं। उन्हें गुलाम बनाया जा रहा है। इस सम्बन्ध में प्रेम सिंह का कथन उल्लेखनीय है ङ्क 'बाजार और प्रौद्योगिकी के स्वामी बिल क्लिंटन और बिल गेट्स जैसे राजनैतिक-आर्थिक क्षेत्र के चक्रवर्ती सम्राट ही हो सकते हैं, बाकी और कोई वैसा मुगालता पालता है, तो यही कहा जायेगा कि गुलामी की बात स्वीकार करने में कोई भी मनुष्य या समाज अपनी हेठी मानता है।'[1] देश के युवाओं की इस अवस्था का चित्रण वीरेन डंगवाल की 'मार्च की एक शाम में आईआईटी कानपुर' कविता में किया है। वे लिखते हैं- 'गर्वीली गर्दनों वाले कितने किशोर / आए यहाँ / गुम हो गए। / मेधा उनकी/ पुकारती रही / पुकारती रही विकल। / फिर उस्ताद हत्यारों ने उसे बदला / एक निश्छल लालच में। / अंत में बन जाएगी वह / बिल गेट्स का एक / निर्जीव किंतु दक्ष हाथ / आत्ममुग्ध फुर्ती से घुमाता स्टीयरिंग / काटता खतरनाक मोड़।'[2] कवि कहना चाहते हैं कि पूंजीवादी ताकतों ने अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए दुनिया के तमाम विकासशील और अविकसित देशों के युवाओं में नई महत्वाकांक्षा के नाम पर संकीर्ण मानसिकता को बढ़ावा दिया और अपनी स्वार्थी नीति चलाई। तकनीक के आधार पर और भूमंडलीकरण के नाम पर नव पूंजीपति वर्ग ने दुनिया को एक गांव के रूप में परिवर्तित किया। उस तरह का प्रचार-प्रसार किया जाने लगा। कंप्यूटर ने इसे और आसान बनाने में उनकी सहायता की। कंप्यूटर के माध्यम से भले ही दुनिया नजदीक आई हो परंतु संबंधों में काफी दूरियां निर्माण हुई हैं। दुनिया एक गांव तो बन गया परंतु सभी गांव इस दुनिया से बाहर हो गए हैं। कवि के शब्दों में - 'दुनिया एक गाँव तो बने / लेकिन सारे गाँव बाहर रहें उस दुनिया के / यह कंप्यूटर करामात हो।'[3]

भूमंडलीकरण नई तकनीक और सुविधाएं लेकर आया लेकिन यह तकनीक और सुविधाएं अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए उपयोग में लाई गई। नए-नए उपकरण और सुविधाएं जब आती हैं तब वह भौतिक सुविधाएं केवल भौतिक न रहकर उपभोक्ताओं के सामाजिक, सांस्कृतिक वातावरण को परिवर्तित कर देती है। भूमंडलीकरण के पहले तक टेलीफोन या मोबाइल जैसी भौतिक सुविधाएँ आम जनता तक नहीं पहुँची थी। इसके पूर्व अपने स्वकीय तक संदेश पहुंचाने का एकमात्र जरिया पोस्टकार्ड हुआ करता था। पोस्टकार्ड में अपने मन की भाव-भावनाओं को अभिव्यक्त कर अपने आत्मीय तक पहुंचाया जाता था। परंतु भूमंडलीकरण ने टेलीफोन का जंजाल फैला दिया और पोस्टकार्ड को अप्रासंगिक बना दिया। भूमंडलीकरण के इस मलीन समय में कवि को पोस्टकार्ड एक नई उम्मीद दिलाने वाली चीज लगती है। वे लिखते हैं- 'हम पोस्टकार्डों की महिमा के गीत गाएंगे / इस मलीन समय में / उन्हें भी गिनो

उम्मीद दिलानेवाली चीजों में।"

एक सामान्य मनुष्य का जीवन भी इस भूमंडलीकरण के कारण प्रभावित हुआ। मकान या घर हर मनुष्य की एक बुनियादी जरूरत है। परंतु समाज का मेहनत, मजदूरी करने वाला यह मनुष्य बड़ी मुश्किल से अपनी यह बुनियादी जरूरत पूरी करता है। अपने घर में समय के अनुसार आवश्यक चीजें जुटाता है। भूमंडलीकरण ने इस मनुष्य को कई सारी नई चीजें आवश्यक बनाकर खरीदने के लिए मजबूर किया। इसलिए किसी तरह से अपना घर बनाने वाला व्यक्ति भी घर में टेलीविजन की और टेलीफोन की आवश्यकता महसूस करने लगा। यह भूमंडलीकरण की ही देन है। भूमंडलीकरण के दौर में ही उसकी धार्मिक मानसिकता को भी बाजार ने प्रभावित किया। बाजार ने उसकी धार्मिकता को अपना स्वार्थ या मुनाफा बढ़ाने के लिए उपयोग में लाया। वर्तमान समय की इसी सच्चाई को वीरेन डंगवाल की 'अपना घर' कविता अभिव्यक्त करती है। वे लिखते हैं- 'एक कोना टेलीफोन के लिए भी है / जिसके बगैर आजकल गुजर नहीं / एक कोना टेलीविजन के लिए भी है / जिसके बगैर आजकल गुजर नहीं / एक गुप्त कोना भगवान के लिए भी है / जिसके बगैर आजकल गुजर नहीं। यों हर जरूरत को ध्यान में रखकर बना / एक सात होने वाला घर मुझे मयस्सर हुआ।'[5] कंप्यूटर भूमंडलीकरण अर्थात बाजारीकरण की नीति का अत्यंत महत्वपूर्ण उपकरण बना। कंप्यूटर नवपूंजीवादी वर्ग का प्रतीक है। सामंती वर्ग का प्रतीक है। उसका रख-रखाव भी किसी पूंजीपति या सामंत की तरह ही रखा जाता है। जहाँ भी कंप्यूटर कक्ष रखा जाता है वहाँ पर जूते चप्पल पहन कर जाना वर्जित है। उसे वातानुकूलित साफ-सुथरी जगह दी जाती है। इसीलिए जनता के पक्षधर कवि वीरेन डंगवाल जी पूंजीवादी व्यवस्था को मजबूत बनाने वाली मशीन से घृणा करते हैं। वे लिखते हैं- 'वातानुकूलित / स्वच्छता / सुरीली कट्ट-टक् / जूते-चप्पल बाहर / सिगरेट हरगिज़ नहीं / पान थूकना हो तो फर्लांग भर जाओ / ऐसी नवशेबाज मशीन पर मैं लानत भेजता हूँ।'[6]

भूमंडलीकरण या वैश्वीकरण - बाजारीकरण लोगों को आकर्षित करने के लिए अपनी चमक-दमक के साथ बाजार में उतरा है । इस नई नीति और व्यवस्था का कंप्यूटर भगवान बन गया। इसलिए किसी मंदिर की तरह उसे उसे जगमग कर दिया गया है, सजाया गया है। कवि अपनी 'कम्पूटर-कक्ष' कविता में लिखते हैं- 'छत में उलटे-सीधे इतने छेद बनाए क्यों? / और फर्श पर यह चिकने कालीन बिछाए क्यों? / दरवाजे पर काँच लगाए जगमग-जगमग ज्योति करी / भगवान बने बैठे हैं कंप्यूटर और कंप्यूटरी।" भूमंडलीकरण या बाजारीकरण का परिणाम देश की सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक परिस्थिति पर भी हुआ। इस नई व्यवस्था ने अपनी स्वार्थी नीति के चलते शैक्षिक, सांस्कृतिक नीतियों में परिवर्तन करने के लिए विवश किया। समाज में भय और आतंक का माहौल फैला दिया। अपराध और हिंसा के आधार पर अपना बाजार और मुनाफे की नीति चलाई। टेलीविजन, अखबार जैसे संचार माध्यमों का प्रयोग कर अपनी नीति को प्रचारित-प्रसारित किया। यंत्र तथा मशीन के अत्याधिक प्रयोग से समाज में बेरोजगारी बढ़ गई। पूंजीपति लोग अत्याधिक नफा कमाकर सोने का मुकुट पहन कर घूमने लगे हैं। प्राथमिक शिक्षा तक को विश्व बैंक के हाथों गिरवी रख दिया गया है। इस बदले हुए और भूमंडलीकरण की शिकार भारत का चित्र रेखांकित करते हुए कवि ने लिखा है - टेलीविजन / अखबार भाषा की खुजाती हुई बड़ी आँत / विश्वविद्यालय बेरोजगारों के बीमार कारखाने / गुंडों के मेले राजधानियाँ / कलावा बाँधे गद्गद खल विदूषक / सोने के मुकुट पहनते उतरवा रहे हैं फोटो / प्राथमिक शाला के प्रांगण में / नाच रहा है विभोर विश्व बैंक का कार्याधिकारी / बावर्दी बेवर्दी हत्यारे / रौंद रहे गाँव-गाँव- -नगर-नगर / एक प्रेत लीला सी जैसे चलती रहती है लगातार।" बाजारीकरण केवल आर्थिक नीति नहीं है। इसने मनुष्य का संपूर्ण जीवन झकझोर दिया है। सभ्यता के तौर-तरीके बदल दिए हैं। उसका रहन-सहन, खान-पान तक बदल दिया है। पाश्चात्य संस्कृति और सभ्यता को भारतीय लोगों पर थोंपने का प्रयास भूमंडलीकरण के नाम पर हो रहा है। देसी खान-पान की चीजों को अप्रासंगिक तथा कालबाह्य समझने की मनोवृति समाज में बढ़ रही है। इसका कारण यह नयी वैश्वीकरण की नीति ही है। इस मनोवृति को बढ़ावा देने के लिए बड़ी चालाकी से इस नव पूँजीवादी व्यवस्था द्वारा नीतियाँ आँकी जा रही है। जनमानस की रुचि-अभिरुचि को बदलने के लिए कला, संगीत और साहित्य का प्रयोग किया जा रहा है। पाश्चात्य संस्कृति और सभ्यता को अपनाने वाला प्रगत माना जा रहा है और देसी चीजों का समर्थन करने वाला पिछड़ा समझा जा रहा है। इसी कारण हम अपनी चीजों को भूलते जा रहे हैं। इस तरह की मानसिकता समाज में तेज गति से बढ़ रही हैं। इसलिए परंपरागत रूप से पुदीने की महक जो सबको अपनी ओर आकर्षित करती है, उसे यह बाजार पिछड़ी मानसिकता समझने के लिए माहौल बना रहा है। और नई कृत्रिम खुशबू को परफ्यूम के माध्यम से समाज पर थोंपा जा रहा है। वैश्वीकरण की इस षड्यंत्रकारी नीति के कई सारे लोग शिकार भी बन रहे हैं। परंतु कवि वीरेन डंगवाल जी को यह कृत्रिम खुशबू अच्छी नहीं लगती। वे लिखते हैं- 'उन खुशबुओं से कोई एतराज नहीं मुझे / जो वैश्वीकरण के इन दिनों इतनी भरपूर हैं / कि ठसाठस भरी बसों में भी / गला दबोच लेती हैं / झूठ क्यों बोलूँ उनमें से कई तो काफी मनभावन भी हैं / सौम्य पाश्चात्य संगीत की तरह / लेकिन पोदीने की बात इस सबसे जरा अलग है / जिसे ये हिंदुत्ववादी तो हरगिज़ नहीं समझ पाएंगे ।'[9]

वैश्वीकरण ने एक नया शब्द दिया है- एन जी ओ अर्थात non-government ऑर्गेनाइजेशन। इसका अर्थ है- गैर सरकारी संगठन। वैश्वीकरण के पहले सामान्य जनता अपनी समस्याओं को दूर करने के लिए, संघर्ष करने के लिए आंदोलन चलाने के लिए उत्स्फूर्त रूप से संगठित होकर संघर्ष करती थी। सरकारी यूनियन हुआ करते थे। कई स्वयंसेवी संगठन थे जो लोककल्याण की भावना से काम करते थे। सरकार भी लोककल्याणकारी चेहरा रखती थी। परंतु वैश्वीकरण ने जनता के इन आंदोलनों और संघर्ष को हथियाने के लिए और अपने अनुकूल मोड़ने के लिए एनजीओ जैसे संगठनों को इजात किया। अब इस वैश्वीकरण के दौर में एनजीओ के माध्यम से ही अपनी बात की जाती है और खत्म की जाती है। सभी कल्याणकारी काम एनजीओ के माध्यम से ही किए जा रहे हैं। सभी संघर्ष भी इन्हीं के माध्यम से चलाए जा रहे हैं। सरकारी संगठनों को समाप्त किया जा रहा है। सरकार की लोक कल्याणकारी नीति को खत्म किया जा रहा है। सरकार तथा पूँजीवादी व्यवस्था द्वारा ही ये एनजीओ संचालित की जा रही है। इस लुभावने शब्द के चंगुल में फंसकर सामान्य जनता भी अपना विवेक भूलती जा रही है। इस संबंध में वीरेन डंगवाल जी की 'एनजीओ' यह कविता दृष्टव्य हैं- 'इन्हीं शब्दों के साथ / शुरू की थी उसने अपनी बात / इन्हीं से खत्म की / इन्हीं के साथ संपन्न किए / सारे जरूरी काम / इन्हीं से चलाये जरूरी संघर्ष / इन्हीं से चला रहा है आजकल एन जी ओ।'[10] भूमंडलीकरण की नीति को सारी दुनिया में अमेरिका जैसे पूंजीवादी राष्ट्रों ने प्रचारित - प्रसारित किया। दुनिया के अविकसित तथा विकासशील राष्ट्रों का दोहन करने के लिए इस नीति को चलाया गया। अपनी इस षड्यंत्रकारी नीति को अंजाम देने में उनके मार्ग की बाधा बने राष्ट्र थे और हैं - रूस, चीन, क्यूबा आदि। और यही कारण है कि इन राष्ट्रों को तोड़ने की अंतर्राष्ट्रीय साजिशें चल रही है। सोवियत संघ का विघटन उनके इन षड्यंत्रों का

ही परिणाम है। पूंजीवादी राष्ट्र अपनी भूमंडलीकरण की चकाचौंध भरी नीति के बल पर अपनी शोषण की नीति को छिपाने का प्रयास करते हैं। इसके लिए वे लुभावने शब्दों को इजात करते है। अपनी कुटिल अंधकार को छिपाने का प्रयास करते हैं। इसी सत्य को प्रतीकात्मक रूप से उद्घाटित करते हुए कवि वीरेन डंगवाल जी ने अपनी सोविएत संघ की स्मृति में लिखी ' सितारों के बारे में' कविता में भूमंडलीकरण की पोल खोल दी है। वे लिखते हैं- 'छँह रात्रि की थी, तारों की नहीं / मगर भरमाता रहा हमें प्यार। / वे तो बस मढते थे रात को अपनी चमक से / जैसे अंधकार की सुंदर व्याख्या करते / रिझाने वाले चतुर शब्द!'[11] अपने भूमंडलीकरण की नीति के प्रचार-प्रसार में चीन भी अमेरिका की दृष्टि से एक बहुत बड़ी बाधा है। और यही कारण है कि इन दोनों राष्ट्रों में एक दूसरे की नीतियों को परास्त करने की कोशिशें की जाती है। अमेरिका तथा अन्य पूँजीवादी राष्ट्रों द्वारा चीन की प्रगति को बदनाम करने की कोशिशें की जाती है, उन्हें विद्वेष भरी नजरों से देखा जाता है। कवि के शब्दों में- 'चीन की महान दीवार / जिसे ताकते हैं वे अपने अंतरिक्ष से भी / एक विद्वेष-भरी टकटकी में।'[12] भूमंडलीकरण के बाद सरकार की नीतियां और अधिक नव पूंजीवाद के हित में संचालित होने लगी। इसलिए इसे नव साम्राज्यवाद कहा जा रहा है। इस संबंध में प्रेम सिंह जी लिखते हैं- 'यह नवसाम्राज्यवाद का दौर है। अब वैश्विक आर्थिक संस्थाएँ और बहुराष्ट्रीय-परराष्ट्रीय कंपनियाँ एक के बाद एक क्षेत्र (सैक्टर), मसलन कृषि, उद्योग, बीमा बिजली, स्वास्थ्य, सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयाँ आदि को अपने कब्जे में लेती जा रही हैं। देश की सरकार इस नवसाम्राज्यवादी मुहीम में तत्पर सहयोगी बनी हुई है।'[13] पूंजीपतियों की चाटुकारी करनेवाली नीतियों ने जनता की और अधिक उपेक्षा की। लोक कल्याण का वादा कर सत्ता में बैठनेवाली सरकारें पूंजीपतियों के हित में काम करने लगी हैं। इसी सच्चाई को 'तारन्ता बाबू से कुछ सवाल' इस कविता के माध्यम से कवि डंगवाल ने व्यक्त किया। वे कहते हैं- 'जरा सोचो, अक्सर वहीं क्यों जलायी गयीं बत्तियाँ खूब / जहाँ उनकी सबसे कम जरूरत थी / जिन पर चलते सबसे कम मनुष्य / आखिर क्यों वहीं सड़कें बनीं चौड़ी-चकली? / खुशबुएँ बनाने का उद्योग / आखिर कैसे बन गया इतना भीमकाय / पसीना जबकि हो गया एक फटा हुआ उपेक्षित जूता / हमारे इस समय में / जबकि सबसे साबुत सच तब भी वही था।'[14]

अर्थात् कवि कहना चाहते हैं कि सरकार द्वारा पूंजीपतियों के हित में सुविधाएँ जुटाई जाती हैं। उनके महलों के इर्द-गिर्द सरकारी बत्तियाँ जलाई जाती हैं। वे जहाँ रहते हैं, जहाँ से गुजरते हैं वहीं की सड़कें चौड़ी और चिकनी बनाई जाती हैं। लोगों को आकर्षित करने के लिए खुशबुओं के व्यापार को बढ़ावा दिया जाता है और पूंजीपतियों की दिन-रात सेवा करनेवाले, पसीना बहानेवाले मंजदूर, मेहनतकश मनुष्य को उपेक्षित रखा जाता है। उसका अस्तित्व केवल एक उपेक्षित फटे हुए जूते के समान माना गया है। भूमंडलीकरण के पहले भी सरकार का कमोबेश रूप में यही रवैया था लेकिन भूमंडलीकरण के बाद नवपूंजीवादी वर्ग के हित में इन सरकारों ने अपने लोक कल्याणकारी चेहरे को पूरी तरह से छोड़कर सामान्य जनता की उपेक्षा की है। भूमंडलीकरण ने आधुनिक तंत्रज्ञान एवं उपकरणों का उपयोग अपनी नीति को संचालित करने के लिए और अत्याधिक मुनाफा कमाने के लिए किया है। 'भूमंडलीकरण की इस प्रक्रिया के आधुनिक बहुत व्यापक प्रसार का मुख्य कारण तकनीकी प्रगति को बताया जाता है।'[15] टेलीविजन, मोबाइल आदि के माध्यम से अपनी नीतियों को प्रचारित-प्रसारित किया। टीवी चैनलों के माध्यम से जनता पर अपना प्रभाव स्थापित करने का प्रयास किया। लोकतंत्र का चौथा आधार स्तंभ कहे जानेवाले मीडिया ने भी पूंजीवाद का दामन थाम लिया। इसी के परिणाम स्वरूप जब कोई पत्रकार या नैरेटर अपनी खबर के माध्यम से सच्चाई को बताने का प्रयास करता है तो प्रोड्यूसर या टीवी चैनल का मालिक उसे अप्रस्तुत कर रोक देता है। भूमंडलीकरण के बाद मीडिया का यह रूप तेजी से बदला है और इसी को कवि वीरेन डंगवाल जी ने अपनी कविता के माध्यम से व्यक्त किया है। वे लिखते हैं-'कायल कर लूंगा दर्शकों को / सारे रंगों को ध्वस्त कर दूंगा / कैमरा रह जाएगा महज एक काला उपकरण / बहा ले जाऊंगा मैं वह सब, / छा जाऊंगा।' / 'नहीं भाई, नहीं' / हिलती है प्रोड्यूसर की रत्नजडित मोटी उंगली / 'ऐसे तो तुम कर दोगे / सब सत्यानाश।'[16] इस तरह से आज मीडिया भी भूमंडलीकरण की नीति का प्रचार और प्रसारक बन गया है। प्रोड्यूसर की मोटी उंगली में रत्नजडित अँगूठी मीडिया और नव पूँजीवादी व्यवस्था की सांठ-गाँठ को ही दर्शाता है। इस सत्य को ही कवि वीरेन डंगवाल जी ने प्रस्तुत किया है।

निष्कर्षत: कहा जा सकता की वीरेन डंगवाल जी की कविता देश में भूमंडलीकरण के प्रारंभ होने के बाद के पहले दस वर्ष में आये बदलाव का यथार्थ चित्र अंकित करती है। नव पूँजीवादी राष्ट्रों की भूमंडलीकरण की नीति न केवल आर्थिक बल्कि देश की सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक वातावरण को भी बुरी तरह से झकझोर दिया। कवि ने इस परिवर्तन का भी अत्यंत सूक्ष्म चित्रण अपनी कविता में किया है। जनसंचार के अत्याधुनिक माध्यमों का उपयोग कर भूमंडलीकरण की नीति को बड़ी आसानी से किस तरह संचालित किया है, इसका भी अत्यंत वस्तुनिष्ठ विवेचन डंगवाल जी की कविता में मिलता है। इस नई नीति के परिणामस्वरुप समाज के सामान्य मनुष्य का जीवन अत्यंत दयनीय तथा शोचनीय बन गया है। उसे अब नए तरीके से ठगा जा रहा है। नई नीति के तहत उसका शोषण हो रहा है। कवि ने सामान्य, मेहनतकश मनुष्य के जीवन के यथार्थ का भी अत्यंत मार्मिक चित्रण किया है।

**संदर्भ सूची :-**


1. सिंह, प्रेम, उदारीकरण की तानाशाही, नयी दिल्ली , राजकमल प्रकाशन, 2008, पृ. 43
2. डंगवाल, वीरेन, दुष्चक्र में स्रष्टा, नयी दिल्ली , राजकमल प्रकाशन, 2015, पृ. 19
3. वही, पृ.19.
4. वही, पृ. 42,
5. वही, पृ. 48-49
6. वही, पृ. 61
7. वही, पृ. 61
8. वही, 79
9. वही, पृ. 87
10. वही, पृ. 107
11. वही, पृ. 35
12. वही, पृ. 36
13. सिंह, प्रेम, उदारीकरण की तानाशाही, नयी दिल्ली , राजकमल प्रकाशन, 2008, पृ. 81
14. डंगवाल, वीरेन, दुष्चक्र में स्रष्टा, नयी दिल्ली , राजकमल प्रकाशन, 2015, पृ. 41
15. काबरा, कमल नयन, भूमंडलीकरण : विचार, नीतियाँ और विकल्प, नयी दिल्ली, प्रकाशन संस्थान, 2005 , पृ. 46
16. डंगवाल, वीरेन, दुष्चक्र में स्रष्टा, नयी दिल्ली , राजकमल प्रकाशन, 2015, पृ. 57